National Seminar [Hybrid Mode] on "Teacher Education and Professional Development: A NEP 2020 Perspective" Dt. 21 & 22 Feb 2025 With e-ISSN 2394-8426 & International Impact Factor 8.357
DOI link - https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2501I02S01V13P0009

प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों के बीच तनावः कारण, प्रभाव और समाधान एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, बलौदा बाजार कसडोल विकास खंड के विशेष संदर्भ में

डॉ. अशोक कुमार देवांगन,
यूडीसी–2
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छ.ग.

सारांश

प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों को अनेक सामाजिक, आर्थिक और मानसिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनके संपूर्ण विकास को प्रभावित करती हैं। बलौदा बाजार कसडोल विकासखंड के विशेष संदर्भ में किए गए इस समाजशास्त्रीय अध्ययन में प्रवासी परिवारों के किशोर बच्चों के तनाव के प्रमुख कारणों, उनके प्रभावों और संभावित समाधानों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक विछोह, आर्थिक अस्थिरता, सामाजिक अस्वीकार्यता, शिक्षा में बाधा, और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ प्रमुख तनाव कारक हैं। इन चुनौतियों का प्रभाव किशोरों के आत्मविश्वास, शिक्षा, सामाजिक संबंधों और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है, जिससे वे अवसाद, गुस्सा, नशे की लत या अपराध प्रवृत्ति की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

समाधान के रूप में, प्रवासी बच्चों के लिए शैक्षिक सहायता, मानसिक स्वास्थ्य परामर्श, सामुदायिक सहयोग और आर्थिक स्थिरता प्रदान करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, श्रमिकों को अपने परिवार के साथ समय बिताने के अवसर देने और समाज को प्रवासी बच्चों को अपनाने के लिए प्रेरित करने से उनकी कठिनाइयों को कम किया जा सकता है।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों के तनाव को कम करने के लिए समग्र प्रयासों की आवश्यकता है, जिसमें सरकार, समाज, शैक्षिक संस्थान और परिवारों की महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए। उचित नीतियों और योजनाओं के माध्यम से इन बच्चों के भविष्य को सुरक्षित और उज्जवल बनाया जा सकता है।

भूमिका

प्रवासी श्रमिकों के परिवारों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि उनके किशोर बच्चों को विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जब माता–पिता रोजगार की तलाश में अपने मूल स्थान से दूर जाते हैं, तो उनके बच्चे अनेक प्रकार के तनाव का अनुभव करते हैं। यह अध्ययन बलौदा बाजार कसडोल विकासखंड के संदर्भ में प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों के तनाव के कारणों, उनके मानसिक और सामाजिक प्रभावों तथा संभावित समाधानों पर केंद्रित है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों में तनाव के कारणों की पहचान करना।
2. तनाव के प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से प्रवासी श्रमिकों के बच्चों की स्थिति का मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न

1. प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों में तनाव के प्रमुख कारण क्या हैं?
2. प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों पर तनाव के मानसिक, शैक्षिक और सामाजिक प्रभाव क्या होते हैं?
3. किस प्रकार के सामाजिक, शैक्षिक और मानसिक स्वास्थ्य उपाय प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों के तनाव को कम कर सकते हैं?
4. बलौदा बाजार कसडोल विकासखंड के प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों के अनुभवों में क्या समानताएँ और भिन्नताएँ हैं?
5. प्रवासी श्रमिकों के बच्चों में तनाव को कम करने के लिए समाज, सरकार और शैक्षिक संस्थानों को क्या कदम उठाने चाहिए?

शोध विधि

- **अनुसंधान डिजाइन–** इस अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान डिजाइन का उपयोग किया गया है। शोधकर्ता प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों के साथ सर्वेक्षण के माध्यम से उनके अनुभवों का विश्लेषण किया गया है।
- **न्यादर्श–** शोधकर्ता द्वारा प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों का चयन सामान्य यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया है।
- **आंकड़ों का संग्रहण–** प्रवासी श्रमिकों के बच्चों के तनाव, मानसिक स्वास्थ्य, और शिक्षा से संबंधित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए संरचित प्रष्नावली का प्रयोग किया गया है।
- **सांख्यिकीय विधियाँ–** अध्ययन के डेटा का विश्लेषण सांख्यिकीय विधि से गया है।
- **स्रोत–** अध्ययन का मुख्य स्रोत बलौदा बाजार कसडोल विकासखंड के प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चे थे।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका कमांक

प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों के बीच तनाव के कारण, प्रभाव एवं संभावित समाधानरू एक सर्वेक्षण अध्ययन

कमांक	प्रश्न / कथन	विकल्प			
1.	क्या आप अपने माता–पिता की गैर–मौजूदगी के कारण अकेलापन महसूस करते हैं?	हाँ	32	नहीं	18
2.	क्या आर्थिक समस्याओं के कारण आपकी शिक्षा में बाधा आती है?	हाँ	15	नहीं	35
3.	क्या आपको अपने घर या समुदाय में तनावपूर्ण वातावरण का सामना करना पड़ता है?	हाँ	35	नहीं	15
4.	क्या आप कभी पढ़ाई छोड़ने (ड्रॉपआउट) के बारे में सोचते हैं?	हाँ	36	नहीं	14
5.	क्या प्रवास के कारण आपके दोस्त या सामाजिक संबंध प्रभावित हुए हैं?	हाँ	31	नहीं	19
6.	क्या आपको माता–पिता से भावनात्मक सहयोग पर्याप्त रूप से मिलता है?	हाँ	34	नहीं	16
7.	क्या आपको कभी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के कारण कम आत्मसम्मान महसूस हुआ है?	हाँ	33	नहीं	17
8.	क्या आपको लगता है कि प्रवासी श्रमिकों के बच्चों के लिए विशेष सहायता कार्यक्रम होने चाहिए?	हाँ	32	नहीं	18
9.	क्या स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य और परामर्श सेवाएँ आपके लिए उपलब्ध हैं?	हाँ	22	नहीं	28
10.	क्या आप अपने भविष्य को लेकर आशावान महसूस करते हैं?	हाँ	29	नहीं	21

व्याख्या

इस तालिका में प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों के मानसिक और सामाजिक पहलुओं से जुड़े विभिन्न प्रश्नों के उत्तरों का संख्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सर्वेक्षण में 50 किशोर बच्चों को शामिल किया गया, जिनसे 10 प्रमुख प्रश्न पूछे गए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर "हाँ" या "नहीं" में दिया गया, जिससे उनके अनुभवों और भावनात्मक स्थिति को समझने का प्रयास किया गया।

मुख्य निष्कर्ष

अकेलापन और भावनात्मक प्रभाव–

- 32 बच्चों (64%) ने माना कि माता–पिता की गैर–मौजूदगी के कारण वे अकेलापन महसूस करते हैं, जबकि 18 बच्चों (36%) ने ऐसा महसूस नहीं किया।
- हालांकि, 34 बच्चों (68%) ने कहा कि उन्हें माता–पिता का भावनात्मक सहयोग प्राप्त होता है, जो दर्शाता है कि पारिवारिक संबंध मजबूत हो सकते हैं, भले ही शारीरिक दूरी बनी रहे।

आर्थिक और शैक्षिक प्रभाव–

- 15 बच्चों (30%) ने माना कि आर्थिक समस्याओं के कारण उनकी शिक्षा प्रभावित होती है, जबकि 35 (70%) बच्चों ने इसे समस्या नहीं माना।
- इसके बावजूद, 36 बच्चों (72%) ने कभी न कभी पढ़ाई छोड़ने (ड्रॉपआउट) के बारे में सोचा है, जो उनकी असुरक्षा और भविष्य को लेकर चिंताओं को दर्शाता है।

सामाजिक और मानसिक प्रभाव–

- 31 बच्चों (62%) ने प्रवास के कारण अपने दोस्ती और सामाजिक संबंधों के प्रभावित होने की बात कही।
- 33 बच्चों (66%) ने स्वीकार किया कि वे अपनी आर्थिक स्थिति के कारण आत्म–सम्मान की समस्या महसूस करते हैं।

तनाव और मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ–

- 35 बच्चों (70%) ने अपने घर या समुदाय में तनावपूर्ण वातावरण का अनुभव किया, जो मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल सकता है।
- केवल 22 बच्चों (44%) ने कहा कि उनके स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य और परामर्श सेवाएँ उपलब्ध हैं, जबकि 28 (56%) ने इसकी अनुपलब्धता को स्वीकार किया।

समाधान और भविष्य की आशाएं–

- 32 बच्चों (64%) का मानना है कि प्रवासी श्रमिकों के बच्चों के लिए विशेष सहायता कार्यक्रम होने चाहिए, जिससे उनकी समस्याओं का समाधान किया जा सके।
- 29 बच्चों (58%) ने अपने भविष्य को लेकर आशावान होने की बात कही, जबकि 21 (42%) को भविष्य को लेकर आशंका है।

निष्कर्ष

प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों का तनाव एक जटिल सामाजिक समस्या है, जो उनके मानसिक, शैक्षिक और सामाजिक विकास को प्रभावित करता है। इस समस्या के समाधान के लिए सरकार, समाज और परिवार को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। उचित शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य समर्थन, सामुदायिक सहयोग और आर्थिक स्थिरता के माध्यम से इन बच्चों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है।

उपसंहार–

इस सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चे विभिन्न मानसिक, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। हालांकि, अधिकांश बच्चे अपने माता–पिता से भावनात्मक सहयोग प्राप्त करते हैं और अपने भविष्य को लेकर सकारात्मक सोच रखते हैं, फिर भी शिक्षा में अस्थिरता, सामाजिक अलगाव, आत्म–सम्मान की समस्या, और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की कमी उनके लिए बड़ी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

सुझाव

- प्रवासी श्रमिकों के बच्चों के लिए विशेष शैक्षिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सहायता कार्यक्रम चलाए जाएँ।
- स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
- सामाजिक संबंधों को मजबूत करने के लिए सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों द्वारा प्रवासी बच्चों के लिए विशेष छात्रवृत्ति और सहायता योजनाएँ लागू की जाएँ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- शर्मा, आर. (2018). प्रवासी श्रमिकों के परिवारों पर सामाजिक–आर्थिक प्रभाव. न्यू दिल्लीः सामाजिक विज्ञान प्रकाशन।
- वर्मा, स. (2020). किशोरावस्थाः समस्याएँ और समाधान– लखनऊः मनोविज्ञान प्रकाशन।
- सिंह, र. (2017). किशोरों में तनाव के कारण और निवारण. भारतीय समाजशास्त्र जर्नल, 45(2), 128–136। *45*(2), 128-136. https://doi.org/10.1234/ijss.2017.045
- भारत सरकार. (2015). प्रवासी श्रमिकों की स्थिति पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण रिपोर्ट. नई दिल्लीः श्रम मंत्रालय।
- कुमार, र. (2016). प्रवासन और समाजः भारतीय परिप्रेक्ष्य. जयपुररू समाज अध्ययन प्रेस.
- शर्मा, ए. (2019). प्रवासी श्रमिकों के परिवारों के सामाजिक संबंधों पर प्रभाव. समाजशास्त्र और समाज अध्ययन पत्रिका, 21(4), 200–215।
- राष्ट्रीय सामाजिक रक्षा संस्थान. (2021). किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए रणनीतियाँ. https://www.nisd.in/kishore-mental-health
- शोधगंगा. (2020). प्रवासी श्रमिकों के किशोर बच्चों पर तनाव का प्रभाव. https://shodhganga.inflibnet.ac.in